पाण्डुलिपियों का महत्त्व

डॉ अनीता व्यास
प्रोफेसर अर्थशास्त्र
अपेक्स यूनिवर्सिटी जयपुर

शोधपत्र

पाण्डुलिपि (Pandulipi) का अर्थ है हस्तलिखित दस्तावेज़, पांडपत्र या मूल लेखन, जिसमें प्राचीन ज्ञान, विचार और ऐतिहासिक घटनाओं का अमूल्य संग्रह सुरक्षित रहता है। भारतीय परंपरा में पाण्डुलिपियाँ केवल साहित्यिक या धार्मिक ग्रंथों तक सीमित नहीं रहीं, बल्कि अर्थशास्त्र, राजनीति, कृषि, व्यापार और समाजशास्त्र जैसे विविध विषयों की महत्वपूर्ण जानकारी भी इनमें मिलती है। अर्थशास्त्र (Economics) समाज के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग की प्रक्रियाओं को समझने का विज्ञान है। पाण्डुलिपियों के माध्यम से प्राचीन आर्थिक विचारों और नीतियों को समझने का अवसर प्राप्त होता है।

पाण्डुलिपियों का ऐतिहासिक महत्व

भारत में पाण्डुलिपियों का इतिहास वेदकाल से जुड़ा हुआ है। ताड़पत्र, भोजपत्र, कपड़ा, चमड़ा और कागज पर लिखी गई ये पाण्डुलिपियाँ समय-समय पर राजकीय संरक्षण और शैक्षिक संस्थाओं द्वारा संकलित की गई। नालंदा, तक्षशिला, विक्रमशिला और जयपुर, बनारस जैसे केंद्र पाण्डुलिपि संरक्षण के प्रमुख स्थल रहे। इन दस्तावेज़ों से प्राचीन आर्थिक तंत्र, कर व्यवस्था, व्यापारिक मार्ग, कृषि पद्धति और शिल्पकला का ज्ञान मिलता है।

पाण्डुलिपियों में अर्थशास्त्र

भारतीय अर्थशास्त्र की जड़ें प्राचीन ग्रंथों में मिलती हैं। कौटिल्य का अर्थशास्त्र पाण्डुलिपि स्वरूप में ही पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रहा, जो कर नीति, व्यापारिक नियंत्रण, मुद्रा प्रबंधन और राज्य वित्त के सिद्धांतों का वर्णन

करता है। इसी प्रकार ऋग्वेद, मनुस्मृति, महाभारत, जातक कथाएँ, बौद्ध और जैन ग्रंथों में कृषि, श्रम विभाजन, वस्तु-विनिमय, मुद्रा चलन और बाज़ार व्यवस्था का उल्लेख मिलता है। मध्यकालीन पाण्डुलिपियों में मुगलकालीन कर प्रणाली, जमीनदारी प्रथा और व्यापारिक करों का विवरण मिलता है।

आधुनिक परिप्रेक्ष्य

आज डिजिटल आर्काइव और शोध परियोजनाओं के माध्यम से पाण्डुलिपियों का संरक्षण और अध्ययन हो रहा है। अर्थशास्त्र के शोधकर्ता इन पाण्डुलिपियों से न केवल प्राचीन भारत की आर्थिक संरचना समझते हैं, बल्कि नीतिगत विकास और स्थायी अर्थव्यवस्था के लिए प्रेरणा भी प्राप्त करते हैं। आर्थिक विचारों की यह विरासत आधुनिक नीतियों में परंपरा और नवाचार का संतुलन प्रस्तुत करती है।

संदर्भ (References)

1. कौटिल्य, अर्थशास्त्र, संस्कृत पाण्डुलिपि संस्करण, राष्ट्रीय अभिलेखागार, नई दिल्ली।
2. शर्मा, आर. एस., भारतीय अर्थव्यवस्था का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, 2015।
3. गुप्ता, पी. एल., प्राचीन भारत की अर्थव्यवस्था, मोतीलाल बनारसीदास, 2012।
4. ठक्कर, के., भारतीय पाण्डुलिपि परंपरा, साहित्य भवन, 2018।
5. चट्टोपाध्याय, डी. पी., History of Science, Philosophy and Culture in Indian Civilization, Oxford University Press, 2011।
6. सिंह, जे. पी., Economic History of Medieval India, रावत पब्लिकेशन, 2014।
7. थापर, रोमिला, Early India: From the Origins to AD 1300, Penguin, 2003।
8. श्रीवास्तव, वी. एस., भारतीय हस्तलिखित ग्रंथ और उनका महत्व, भारतीय ज्ञानपीठ, 2016।
9. National Mission for Manuscripts (India), Annual Report, Ministry of Culture, Government of India
10. Altekar, A. S., State and Government in Ancient India, Motilal Banarsidass, 2010।